

सामाजिक विज्ञान

(नागरिक शास्त्र)

अध्याय-4: लड़के और लड़कियों के रूप में
बड़ा होना



हमारे समाज में लड़के और लड़कियों को अलग तरह से पाला जाता है। महिलाओं के काम और भूमिका को पुरुषों की तुलना में कम महत्व दिया जाता है। जहां तक लड़के और लड़कियों के पालन-पोषण का संबंध है, विभिन्न समाजों में कई भिन्नताएं मौजूद हैं। जबकि कुछ समाजों में, ये अंतर न्यूनतम हैं तो कुछ समाजों में यह अंतर अधिक है।

समोअन द्वीप समूह (1920) और मध्य प्रदेश (1960) में समाज

समोअन द्वीप समूह:

समोअन द्वीप समूह प्रशांत महासागर के दक्षिणी भाग में बड़े द्वीपों का एक समूह है। समोअन द्वीप समूह में समाज के बारे में कुछ तथ्य निम्नलिखित हैं:

- 1920 के दशक में, समोअन द्वीप समूह के बच्चे स्कूल नहीं जाते थे। जब बच्चों ने चलना सीखा, तो उनकी माताओं ने उनकी देखभाल करना बंद कर दिया।
- करीब पांच साल के बड़े बच्चों ने अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल की जिम्मेदारी ली।
- जब वे नौ साल के थे, तब लड़के मछली पकड़ने गए या नारियल लगाने गए, जबकि लड़कियां घर का काम करती रहीं।
- अपनी किशोरावस्था में, लड़कियों ने काफी हद तक स्वतंत्रता का आनंद लिया।
- चौदह वर्ष की आयु पूरी करने के बाद, वे मछली पकड़ने गए, बागानों में काम किया और टोकरियाँ बनाना सीखा।
- लड़कों को विशेष खाना पकाने के घरों में खाना बनाना था, जबकि लड़कियों ने तैयारी में उनकी मदद की।

मध्य प्रदेश :

- छठी कक्षा पूरी करने के बाद लड़के और लड़कियां अलग-अलग स्कूलों में चले गए।
- स्कूलों में, लड़कियां स्कूल के परिसर के भीतर स्थित एक अलग आंगन में खेलती थीं, जबकि लड़के एक खेल के मैदान में खेलते थे जो कि स्कूल से जुड़ा हुआ था।

- शाम के समय लड़के सड़कों पर जमा हो गए और उन लड़कियों के समूह को देखा जो हमेशा अपने घर पहुंचने की जल्दी में रहती थीं।
- जबकि लड़कों के लिए, गली घूमने या साइकिल चलाने की जगह थी, लड़कियां हमेशा अपने घरों की ओर दौड़ती थीं। लड़कों द्वारा छोड़े जाने के डर से वे हमेशा समूहों में सड़कों को पार करते थे।

लड़कों और लड़कियों के पालन-पोषण में समाज की भूमिका

समोअन द्वीप और मध्य प्रदेश के उपरोक्त उदाहरण से हम निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचते हैं-

- समाज लड़कों और लड़कियों के पालन-पोषण को प्रभावित करता है और यह प्रभाव बहुत कम उम्र में शुरू होता है। उदाहरण के लिए जहां लड़कों को खेलने के लिए बंदूकें और वीडियो गेम दिए जाते हैं, वहीं लड़कियों को गुड़िया और किचन सेट दिए जाते हैं। यह लड़कों और लड़कियों की भविष्य की भूमिकाओं को परिभाषित करने का एक तरीका है।



- समाज लड़कियों और लड़कों के लिए ड्रेस कोड भी तय करता है। लड़के और लड़कियों को अलग-अलग व्यवहार करना चाहिए।
- उनके शुरुआती जीवन में ये चीजें हैं जो उनके करियर को प्रभावित करती हैं जिन्हें वे बाद में चुनते हैं।

महिलाओं का कार्य

- चूंकि समाज में महिलाएं घर के कामों में लगी हुई हैं, इसलिए उनके काम को न तो महत्व दिया जाता है और न ही सम्मान दिया जाता है।

- घर के सभी काम जैसे परिवार के सदस्यों की देखभाल करना, सफाई करना, धोना, खाना बनाना आदि ऐसे काम हैं जो महिलाओं से स्वाभाविक रूप से करने की अपेक्षा की जाती है। ऐसे में उनके काम का सम्मान नहीं किया जाता है।
- चूंकि महिलाओं को घरेलू काम के लिए भुगतान नहीं किया जाता है, इसलिए उनका काम अदृश्य रहता है और इसे आर्थिक गतिविधि नहीं माना जाता है। इस प्रकार, उनके काम का समाज द्वारा अवमूल्यन किया जाता है।
- घर के काम में भारी शारीरिक श्रम भी शामिल है। कई ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों और महिलाओं को पानी लाने के लिए कई किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। वे जलाऊ लकड़ी का भारी भार भी उठाते हैं। इसके अलावा घर के कई काम शारीरिक रूप से भीषण होते हैं।
- जबकि महिलाएं घर पर काम करती हैं, वे बाहर भी काम कर सकती हैं। कई महिलाएं घरेलू नौकर या खेतों में काम करती हैं। ऐसे में वे पुरुषों से ज्यादा काम करती हैं।



समाज में महिलाएं घर के कामों में लगी हुई हैं, इसलिए उनके काम को न तो महत्व दिया जाता है और न ही सम्मान दिया जाता है।

घरेलू कामगार के रूप में महिलाएं:

महिला घरेलू कामगारों का जीवन आसान नहीं है क्योंकि:

- वे सफाई, खाना पकाने, धोने और बच्चों की देखभाल जैसे काम करते हैं।
- हालाँकि वे बहुत प्रयास करते हैं, लेकिन उन्हें अपने नियोक्ताओं से कोई सम्मान नहीं

मिलता है।

- घरेलू काम का कम भुगतान किया जाता है क्योंकि इसे कुशल नौकरी नहीं माना जाता है।
- घरेलू कामगार का दिन सुबह पांच बजे से शुरू हो सकता है और रात के बारह बजे तक खत्म हो सकता है।
- दूसरे घरों में घरेलू नौकर के रूप में काम करने के बाद महिलाओं को अपने घरों में भी देखना और काम करना पड़ता है।



घरेलू काम का कम भुगतान किया जाता है
क्योंकि इसे कुशल नौकरी नहीं माना जाता है

महिला के कार्य और समानता :

यद्यपि हमारा संविधान प्रत्येक व्यक्ति को उसके लिंग के बावजूद समान मानता है, हमारे देश में लैंगिक असमानता अभी भी मौजूद है। इस असमानता को दूर करने के लिए सरकार ने निम्नलिखित कदम उठाए हैं:

- सरकार ने यह महसूस किया है कि पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता तभी हासिल की जा सकती है जब महिलाएं शिक्षित हों। कई लड़कियां स्कूल नहीं जा पाती हैं क्योंकि उन्हें या तो अपने भाई-बहनों की देखभाल करनी पड़ती है या घर का काम करना पड़ता है।
- इस समस्या को हल करने के लिए सरकार ने देश के कई गांवों में कई आंगनवाड़ी या बाल देखभाल केंद्र स्थापित किए हैं। यह महिलाओं को अपने बच्चों को डे केयर में छोड़कर घर

से बाहर काम करने की अनुमति देता है।

- भारत सरकार द्वारा कई कानून पारित किए गए हैं जो 30 से अधिक महिला कर्मचारियों वाले संगठनों के लिए महिलाओं के बच्चों को डे केयर सुविधाएं प्रदान करना अनिवार्य बनाता है।
- डे केयर का यह प्रावधान महिलाओं को अपना घर छोड़ने और नौकरी करने में मदद करता है।
- कई राज्य सरकारों ने छात्राओं के लिए स्कूल ट्यूशन फीस को या तो कम कर दिया है या पूरी तरह से माफ कर दिया है।



राज्य सरकारों का एक मुख्य उद्देश्य यह भी है कि महिलाओं को अपने कार्य के लिए पर्याप्त वेतन दिया जाए जैसा कि पुरुषों को दिया जाता है

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 53)

प्रश्न 1 साथ में दिए गए कुछ कथनों पर विचार कीजिए और बताइए कि ये सत्य हैं या असत्य ? अपने उत्तर के समर्थन में एक उदाहरण भी दीजिए।

1. सभी समुदाय और समाजों में लड़कों और लड़कियों को भूमिकाओं के बारे में एक जैसे विचार नहीं पाए जाते।
2. हमारा समाज बढ़ते हुए लड़कों और लड़कियों में कोई भेद नहीं करता।
3. वे महिलाएं जो घर पर रहती हैं कोई काम नहीं करती।
4. महिलाओं के काम पुरुषों के काम की तुलना में कम मूल्यवान समझे जाते हैं।

उत्तर :-

1. हां हमने प्रायः यह देखा है कि कई समुदाय और समाजों की लड़के और लड़कियों की भूमिकाओं के बारे में अलग अलग विचार होते हैं। कुछ अपनी लड़कियों को कम मानने की और लड़कों को हर दर्जा प्राप्त हो उन परम्पराओं को साथ लेकर चलते हैं। कुछ लड़के और लड़कियों को सामान दर्जा देने वाले भी होते हैं।
2. ऐसा नहीं है क्योंकि आज भी कई ऐसे लोग हैं जो लड़कियों को बाहर निकल कर काम करने की स्वीकृति नहीं देते हैं और लड़कों को बाहर पढ़ने तक के लिए भेजकर भेदभाव करते हैं।
3. समाज प्रायः यह देखता है कि महिलाएं सारा दिन घर रहती हैं और घर पर कोई काम नहीं करती हैं। जबकि उनके द्वारा किया गया काम सारा दिन चलता रहता है और पुरुष फिर भी अपना काम 7-8 घंटे में करके घर वापिस आ जाते हैं।
4. महिलाओं द्वारा किया गया काम किसी को दिखता नहीं है क्योंकि इसके उन्हें कोई पैसे नहीं मिलते जबकि पुरुषों द्वारा किया गया काम पैसे के रूप में दिखाई पड़ता है और अधिक मूल्यवान समझा जाता है।

प्रश्न 2 घर का काम अदृश्य होता है और इसका कोई मूल्य नहीं चुकाया जाता। घर के काम शारीरिक रूप से थकाने वाले होते हैं। घर के कामों में बहुत समय खप जाता है।

अपने शब्दों में लिखिए कि ' अदृश्य होने ' ' शारीरिक रूप से थकाने ' और ' समय खप जाने ' जैसे वाक्यांशों से आप क्या समझते हैं ? अपने घर को महिलाओं के काम के आधार पर हर बात को एक उदाहरण से समझाए।

उत्तर –

- **अदृश्य होना** – महिलाओं द्वारा किया जाने वाला काम अदृश्य होता है। उदाहरण के लिए भोजन बनाने तथा बच्चों की देखभाल से कई छोटे – छोटे काम जुड़े हुए होते हैं, जिनकी अनदेखी की जाती है। क्योंकि ऐसा लगता है कि ये काम तो कोई भी कर सकता है।
- **शारीरिक रूप से थकाने वाला** – घर में किए जाने वाले छोटे – छोटे कार्य बहुत होते हैं, जिनके लिए बार – बार इधर से उधर दौड़ना पड़ता है। ये कार्य पूरे दिन चलते रहते हैं, इसलिए ये थका देने वाले होते हैं।
- **समय खपाने वाला** – घरेलू काम देखने में हल्के – फुल्के लगते हैं लेकिन इन्हें करने में महिलाओं का बहुत समय लग जाता है। फिर भी, इन कामों के बारे में कह दिया जाता है कि ये काम बहुत कम समय में हो जाते हैं।

प्रश्न 3 ऐसे विशेष खिलौनों की सूची बनाए, जिनसे लड़के खेलते हैं और ऐसे विशेष खिलौनों को भी सूची बनाए, जिनसे केवल लड़कियाँ खेलती हैं, यदि दोनों सूचियों में कुल अंतर है, तो सोचिए और बताइए कि ऐसा क्यों है ? सोचिए कि क्या इसका कुछ संबंध इस बात से है कि आगे चलकर व्यस्क के रूप में बच्चों को क्या भूमिका निभानी होगी ?

उत्तर –

- **लड़कों के खिलौने** – वीडियो गेम, हवाई जहाज, कार, विमान, जीप ।
- **खेल** – फुटबॉल, हॉकी, कबड्डी, वॉलीबॉल, क्रिकेट आदि ।
- **लड़कियों के खिलौने** – गुड्डे – गुड़ियाँ, संगीत – यंत्र, श्रृंगार – बॉक्स, घर के सामान के खिलौने।
- **खेल** – खो – खो, लुकम छुपाई, फिट्टू खेलना, जिम्नास्टिक, टेनिस, तैराकी, टेबल – टेनिस आदि ।

अंतर के कारण – लड़कों को प्रायः ऐसे खिलौने दिए जाते हैं। जिनसे कठिनता तथा कठोरता का अहसास होता है। लड़के बहादूर बने, बाहर जाकर हर किसी का सामना करे। इसके विपरीत, लड़कियों के खिलौनों से मधुरता और कोमलता का बोध होता है। लड़कियाँ घर के अंदर खेल खेलती हैं। वयस्क के रूप में उनकी भूमिका से संबंध- लड़के और लड़कियाँ जिन खिलौनों के साथ खेलते हैं या वे जो खेल खेलते हैं, निश्चित रूप से उनका संबंध वयस्क रूप में उनकी भूमिका से होता है। खिलौने बच्चों को यह बताने का माध्यम बन जाते हैं कि जब वे बड़े होंगे, तो उनको अपने भविष्य में यही काम करने है।

प्रश्न 4 अगर आपके घर में या आस – पास, घर के कामों में मदद करने वाली कोई महिला है तो उनसे बात कीजिए और उनके बारे में थोड़ा और जानने की कोशिश कीजिए, कि उनके घर में और कौन – कौन है ? वे क्या करते हैं ? उनका घर कहाँ है ? वे रोज कितने घंटे तक काम करती हैं। वे कितना कमा लेती हैं ? इन सारे विवरणों को शामिल कर, एक छोटी – सी कहानी लिखिए।

उत्तर – हमारे आस पास घर के कामों में मदद करने वाली सपना नाम की एक महिला है। उसके परिवार में उसके पति, दो बेटियाँ तथा दो बेटे हैं। उसका परिवार एक छोटे से कमरे में किराए पर रहता है। वह दूसरे लोगों के घर प्रतिदिन 8 से 9 घंटे तक काम करती हैं और प्रतिमास 4000 रूपए लगभग कमा लेती हैं। सपना का पति फैक्ट्री में मजदूर है। सपना दूसरों के घर पर काम करके अपने पति की सहायता करती है। उसका एक लड़का तथा एक लड़की सरकारी स्कूल में पढ़ते हैं। उसका बड़ा लड़का कूलर का काम सीख रहा है। उसकी बड़ी लड़की घर को संभालती हैं।